40

छत्तीसगढ़ी लोकगाथा पण्डवानी की लोक संस्कृति

डॉ गौरी अग्रवाल
प्राध्यापक हिन्दी
डॉ. राधाबाई शासकीय नवीन कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय मठपारा, रायपुर (छत्तीसगढ़)

****

पंडवानी की कथा और गायन शैली छत्तीसगढ़ की धरोहर एवं अमूल्य निधि है। अत: पंडवानी में छत्तीसगढ़ अंचल की लोक संस्कृति की अमिट छाप है। छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति आर्य, निषाद, और आदिवासी संस्कृति का मिलन स्थल है, ये संस्कृतियां त्रिवेणी संगम की तरह लोक जीवन में इस तरह घुली मिली है कि उन्हे बाहर से अलग के देखना दुष्कर कार्य है। इस तरह **छत्तीसगढ़ को भारतीय संस्कृति का संक्षिप्त संस्करण** भी कहा जा सकता है। समन्वय शीलता, सद्भाव, सहजता, सरलता, आतिथ्य प्रेम, धार्मिक एकता, निष्कपटता यहां की विशिष्टता हे। लोकजीवन इन्हीं सांस्कृतिक तत्वों से उजागर होता है — ''छत्तीसगढ़ में जिस तरह से सभ्यता और संस्कृति का विकास हुआ उसमें सदैव समन्वय की भावना प्रभुत्व रही है।''[1] छत्तीसगढ़ क्षेत्र सांस्कृतिक रूप से अत्यंत समृध्द है। यहॉ पर परम्परागत अनेक लोककलाएं आज तक इसलिए सुरक्षित रह सकी उसका कारण यह है कि यह क्षेत्र पर्वतों, वनों एवं नदियों के कारण एक लम्बे समय तक बाहरी लोगो के लिए, दुर्गम बना रहा । प्राचीन काल से ही इस क्षेत्र में स्थानीय अनेक मिथक, देवी—देवता, लोक—विश्वास, लोकधर्म, जातीय स्मृतियों में ताना—बाना बनकर विकसित हुए है।

स्वतंत्रता के बाद और आज औद्योगिकरण युग में दूषित राजनीति, शोषण, छल का माया संसार छत्तीसगढ़ अंचल में विस्तार प्राप्त कर रहा है। भले ही लोग इसे नवीन संस्कृति का नाम देते हैं परंतु यह छत्तीसगढ़ी, लोकजीवन पर घातक प्रभाव डाल रहा है। अन्य क्षेत्रों की तुलना में इसे छत्तीसगढिया कहकर कम आंका जा रहा है। बावजूद छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति की धारा अवरूध्द नहीं हुई। तब कहा जा रहा है **छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया**।''। आज भी लोक के मध्य सहजता, सरलता और निश्छलता विद्यमान है। गीतों एवं नृत्यों की तरह उल्लसमय एवं आडम्बर हीन जीवन की गति, उल्लास के साथ वेदना की कसक भी है, पर मृत्यु का भय नही है। यहां के लोग जीवन को हर परिस्थितियों में पूर्ण मस्ती के साथ जीने की लालसा लिए हुए रहते हैं। यही लालसा त्यौहारों, पर्वो एवं छोटे—छोटे उमंग के क्षणों में उन्हें ही नहीं अपितु उनके चतुर्दिक परिवेश को प्राणवान बनाती चली आ रही है। इसका एक कारण यह भी है कि यहां लोग सदैव कठिनता से सरलता की ओर उन्मुख होते हैं ''हमारी संस्कृति में एक विशेषता है कि हम किसी कठिन से कठिन काम के लिए बहुत सहज और सीधा उपाय निकाल सकते है।''[2]

पंडवानी लोक जीवन और संस्कशति का एक अलिखित महाकाव्य है। छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं में विशिष्ट स्थान रखने वाला गाथा पंडवानी के गायन में लोक जीवन की बांकी—झांकी, चरित्र रक्षा, शौर्य और जातिगत गौरव का दिग्दर्शन होता है। समग्रत: पंडवानी में अभिव्यक्त लोक संस्कशति के तत्वों को निम्नलिखित रूपों में देखा जा सकता है—

१. लोकमान्यताएं एवं लोक विश्वास। २.लोकाचार। ३. संस्कार। ४. मानवीय संबंध ।५.आंचलिक व्यवसाय।

लोकमान्यताएं एवं लोक विश्वास—

लोक विश्वास का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। इस जगत में जितनी भी वस्तुएं उपलब्ध हैं उनके संबंध में कोई न कोई लोक विश्वास प्रचलित है। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी लोकमान्यताएं एवं अपने लोकविश्वास होते हैं जो अंचल की संस्कशति को रेखांकित करते हैं। पंडवानी में वह लोकविश्वास संरक्षित है, जो सामूहिक विश्वास का प्रतीक है। पंडवानी छत्तीसगढ़ अंचल की विशिष्ट लोक विद्या है। यह क्षेत्र अत्याधुनिक प्रवाह में प्रवाहित होने के बाद भी विभिन्न लोक विश्वासों को उजागर करता है। यथा —

छत्तीसगढ़ अंचल गांवों से चतुर्दिक घिरा हुआ है। यहां आज भी जादू–टोना के प्रति लोक की आंचलिक मान्यताएं और विश्वास जीवित है। यहां तंत्र–मंत्र, भूत–प्रेत, टोनही, रक्सा आदि के प्रति गहरा विश्वास है। ये वे कश्त्य हैं जिसके माध्यम से अतिमानवीय जगत पर नियंत्रण स्थापित कर अपनी इच्छानुसार इसका प्रयोग किया जाता है। पंडवानी में इसके उदाहरण प्राप्त होते हैं। **पाराशर ऋषि** का **मस्त्येन्द्र कन्या** के विवाह के संदर्भ में एक प्रसंग आता है कि पाराशर ऋषि गंगा पार हेतु केवट जाति की कन्या के नाव में बैंठ जाते हैं। नदी पार करते समय पाराशर मुनि उस कन्या के रूप के प्रति मोहित हो जाते हैं। तब कन्या निवेदन करती है कि वह अभी वह अबोध है तथा दिन का समय भी है। इस पर पाराशर ऋषि अपने अभिमंत्रित काले पीले चांवल एवं गुंगुल से किस प्रकार जादू कर उस मत्स्येन्द्र कन्या से प्रेम अर्जित करते हैं। उदाहरण देखिए– '' सामने से ऋषि आवाज लगाय हे, कन्या जहां देखे है नजर लगा के कहे– ये कन्या मै तोला देखैव, मोला प्रेम लागत है। मै नाहके बर नाहकत हंव ये जघा डोंगा ल रोक के मोर सेवा कर लेते। कन्या कहे मुनि भोर नदान अवस्था हे। सूर्यनारायण उदयकार हे। उठा के मारे मंतर गुंगुर वरसगे। पुरइन के पन्ता म डोंगा अरझगे। मछंदरिन सेवा करिस।'' [3]

ऐसे ही कई ऐसे प्रसंग पंडवानी में उद्धश्त होते हैं जिसमें जादू–टोना का प्रभाव दश्ष्टिगोचर होता है। जैसे हिडिम्बा, घटोत्कच, मय–दानव आदि के प्रसंग। छत्तीसगढ़ में इस जादुई चमत्कार जानने वाले को बैगा कहा जाता हे। ये भूत–प्रेत बाधा, बीमारी, देवी प्रकोप आदि को अपने तंत्र–मंत्र से शांत करते हैं।

छत्तीसगढ़ के बहुप्रचलित लोक विश्वास है। यह एक अदश्श्य प्रेतयोनी होती है जो दूसरे के धर की सामग्री को अपने पास बडी सरलता से बुला लेती है। पंडवानी में इसका उल्लेख आता है कि दुर्वासा अपने दस हजार शिष्यों के साथ युधिष्ठर के पास पहुंच आतिथ्य स्वीकार कर लेते हैं। द्रौपदी के पास एक ऐसा पात्र था जो द्रौपदी के भोजन पूर्व सभी की क्षुधा तश्प्ति कर सकता था परंतु द्रौपदी के भोजन उपरांत नहीं। छत्तीसगढ़ में इसे ''बटलोही'' कहा जाता है। चूंकि प्रसंग में युधिष्ठर को यह ज्ञात नही रहता कि द्रौपदी ने भोजन कर लिया है। अत: द्रौपदी सहित पांडव में आतिथ्य अपमान की बात सोच व्याकुलता बढ़ जाती है। श्रीकश्ष्ण के उपस्थित होने पर और उस बटलोही में अन्न के अंश की ग्रहण कर लेने से दुर्वासा सहित उनके दस हजार शिष्यों की तश्प्ति हो जाती है। छत्तीसगढ़ की पंडवानी में गायकों द्वारा इस चरिताख्यान में ''बटलोही'' को चटिया–मटिया प्रसंग के रूप उद्धश्त किया जाता है।

मन में किसी के प्रति अमंगल भाव, रखना मनसा–पाप कहलाता है। मनुष्य जब सामाजिक एवं धार्मिक मान्यताओं के विरूध्द आचरण या भाव रखता है तब उसे यह मनसा पाप लगता है, परंतु इस पाप से प्रायश्चित भी सामाजिक एवं धार्मिक विधि– विधान से करना होता है। छत्तीसगढ़ में यह लोक विश्वास है कि मनसा पाप के प्रायश्चित के पश्चात् व्यक्ति अपराध बोध से मुक्त हो जाता है। पंडवानी में एक प्रसंग उदाहरण स्वरूप इस प्रकार है कि सत्यवती एवं भीष्म के एकांतिक सत्संग संवाद से विचित्र वीर्य के मन में दोष उत्पन्न हो जाता हैं। उसके परिहार हेतु भीष्म उपाय इस प्रकार बतलाते है– ''कोनो आदमी ल मनसा दसा लग हत्या लगगे त कइसे ओखर पाप धोवाथै ? ब्रहमचारी कहे भाई जाके कासी में मर जावे ओ आदमी चिता बना के। जाके ससुरार में बारा साल ले रहे या जाके गड़रिया घर भेड़ी चरावे या पीपर खोह में मर जावें।'' [4]

छत्तीसगढ़ के मूल निवासी आदिवासी एवं पिछड़ी जातियां हैं। इन जातियों के मध्य यह भी मान्यता है कि मामा फुआ के पुत्र–पुत्री के मध्य वैवाहिक संबंध श्रेष्ठ और मंगलकारी है। यह लोक मान्यता एवं विश्वास महाभारत काल में भी था जिसका पंडवानी गायन अपने गायन में अभिव्यक्त करते है। यथा– अर्जुन–सुभद्रा का विवाह ममेरे फुफेरे के पुत्र–पुत्री का वैवाहिक संबंध। यह वैवाहिक संबंध छत्तीसगढ़ में कंडरा, गोड़ आदि जातियों में आज भी स्थापित होते हैं।

लोकाचार –

लोक के जीवन में व्यवहत होने वाले आचरण लोकाचार कहलाते हैं। इसके अंतर्गत अंचल के तीज

त्यौहार व्रत, रहन—सहन, वेशभूषा, खानपान, खेल आदि विषय समाहित होते हैं। पंडवानी में सभी आचार समन्वित होकर लोकसंस्कृति को अभिव्यक्त करते हैं। लोक संस्कृति लोक जीवन की आत्मा हैं जो लोक के रहन—सहन, आचार—व्यवहार, खान—पान, उत्सव, व्रत—त्यौहार, पर्व, धर्म व्यवसाय आदि में प्रतिबिम्बित होती हैं।

भारत में अनेक धर्म एवं सम्प्रदायों की सम्मिलित संस्कृति है। छत्तीसगढ़ अंचल में भी सामाजिक, धार्मिक, सांस्कशतिक, त्यौहार बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाये जाते हैं। छत्तीसगढ़ में प्रचलित विविध त्यौहार और व्रत अंचल की लोक संस्कशति को पोषित और पल्लवित कर रहे हैं। पंडवानी गायक अपनी गायन विद्या में इन त्यौहारों और व्रतों का प्रसंगानुसार उल्लेख करते हैं।

छत्तीसगढ़ अंचल में तीजा का त्यौहार विशिष्ट रूप से मनाया जाता है। इस त्यौहार में अंचल की स्त्रियां अपने मायके में अपने पति के दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन के लिए एक दिवसीय निर्जला व्रत रखती हैं। व्रत पूर्ण करने के उपरांत माता—पिता द्वारा प्रदत्त सौभाग्य प्रतीक चिन्ह साड़ी, चूड़ियां, बिंदी फल—मिठाई आदि प्राप्त कर व्रत का पारणा पूर्ण करती है। तीजा त्यौहार एवं व्रत के मार्मिक एवं सांस्कशतिक स्वरूप से पंडवानी पूर्णत: प्रभावित है। ''द्रौपदी'' तीजा पर्व में अपने मायके जाने की लालसा प्रकट करती है और माता कुंती के आदेश का पालन करते हुए अर्जुन द्रौपदी को सरग रोहनी (द्रौपदी का मातश निवास) पहुंचाने के लिए तैयार हो जाते हैं।   अरे अरे बेटा अर्जुन तै हमार।

जा—जा बेटा सरग.—रोहनी ले जावे।
तीजा—पोरा मना के लेई आवे।
ओतका ल सुने अर्जुन राजा।

t Ynh r ksHbxsfr ; kj jsHkbZ* [6] छत्तीसगढ़ में इसके अतिरिक्त गृहस्थ जीवन के सुख व समृध्दि के लिए गणेश चौथ (जिसे अंचल में सकट कहा जाता है) कृष्ण जन्माष्टमी, सावन—सोमवार, बसंत—पंचमी, नवरात्रि एकादशी आदि के व्रत भी लोक संस्कृति को परिपुष्ट करते हैं। एकादशी व्रत का सुंदर उदाहरण पंडवानी में बकासुर—वध संदर्भ में दृष्टव्य है—

कुंती आज मोर बेटा दसमी के दिन ए दानों मारे ल जात हे। सुंदर बिचारी हाथ में हुम ल धरे एक इन नरियल के फल मढ़ाय अगनी देवता के सामने सुंदर हूम ल छोडके एकादसी दाई ल बदना बदत हे।। कथे एकादसी दाई मोर बेटा दानो मारे बरजात हे, मोर बेटा के तै सहारा कर देवे। मै तोर व्रत रहूं। एकादसी ल बदना बद दीस।'' [7] इन सभी व्रतो और अनुष्ठानों को आत्म निरीक्षण, आत्मरक्षा और जीवन मंगल के लिए पूर्ण किये जाते है। इस संबंध में डॉ. कृष्ण कुमार कथन है है कि ''व्रत व्यक्तिगत जीवन को अधिक पवित्र बनाने के लिए है। उस दिन उपवास ब्रहाचर्य, एकांत सेवन, मौन, आत्म निरीक्षण आदि की विद्या सम्पन्न की जाती है। दुर्गुण छोड़ने और सद्गुण अपनाने के लिए देवपूजन करते समय संकल्प लिये जाते हैं और संकल्प के आधार पर व्यक्तित्व ढाला जाता है।'' [8]

प्रत्येक अंचल के रहन सहन, वेशभूषा के आधार पर लोक संस्कशति पल्लवित होती है। अपनी आर्थिक स्थिति एवं सम्पन्नता के आधार पर लोक भौतिक संसाधनों को अपना कर अपनी लोक संस्कृति का परिचय देते हैं। यद्यपि पंडवानी की कथा महाभारत को आधार मानकर गायी जाती है तथापि पंडवानी गायक आंचलिक रहन—सहन वेशभूषा के आधार पर गायन करते हैं। छत्तीसगढ़ी समाज में स्त्रियां लुगरा (साड़ी) और पुरूष धोती और पंछा धारण करते हैं। पंडवानी में इसके संकेत मिलते है। पंडवानी गायन में एक अनूठे प्रसंग में विवाह के समय में पांडवों की वेशभूषा छत्तीसगढ़ लोक संस्कशति को अभिव्यक्त कर रही है— ''पांचों भाई पांडव सुंदर पीला—पीला धोती पहिरे। सुंदर मऊरे'' [9] लोक आभूषण संस्कृति की पहचान होती है। ये आभूषण बाह्य सौंदर्य से लेकर आन्तरिक सौंदर्य एवं सुख को परिभाषित करते हैं। अंचल विशेष के अपने चयनित आभूषण होते हैं। छत्तीसगढ़ में टिकली, फूली, खिनवा, नागमोरी, बहुंटा, ऐंठी, चुरी, पैरी, करधन आदि आभूषणों की कतार ने अपने अंचल की संस्कशति को संजो कर, सजा कर रखा है। ये सभी आभूषण परम्परागत एवं सांस्कृतिक चेतना के परिचायक हैं। द्रौपदी स्वयंवर में द्रौपदी के आभूषणों का बखान पंडवानी गायक बड़े

मोहक रूप में अभिव्यक्त इस प्रकार कर रहा है — '' अरे भैया माथा के टिकली हे, नाक में फूली है। कान में सुंदर खिनवा हे। महारानी द्रौपदी सुदर नागमोरी पहिरे, बहुंटा पहिरे, ऐंठी पहिरे, चुरी पहिरे, पैर म सुंदर पैरी पहिरे, सुंदर द्रौपदी ल लावन लागे भाई।'' [10]

छत्तीसगढ़ लोकसंस्कृति की अविस्मृत पहचान ''गोदना'' (प्रतीक चिहन) से भी है। स्त्रियां अपने अंगों को सुई और काजल के जैसे काले पदार्थ से संयुक्त कर भिन्न–भिन्न फूल, पत्ते आदि चिहनों से सुसज्जित करवाती है। पंडवानी की द्रौपदी के गोरे गोरे हाथों में गोदना चिहिंत है — ''गोरी गोरी हाथ में सुंदर गोदाय अनेक सुंदर झकझीक–झकझीक दीखथे।'' [11]

खान–पान और रहन–सहन आंचलिकता को प्रमाणिक बनाते हैं। जलवायु एवं स्थान विशेष के आधार पर भोज्य सामग्री पर अंचल का प्रभाव होता है। चूंकि छत्तीसगढ़ ''धान का कटोरा'' के नाम से जाना जाता है। अत: यहां की मुख्य उपज चांवल, कोदो और वन्यांचल में कंदमूल (जिसे आंचलिक शब्द में कांदा कहा जाता) है। छत्तीसगढ़ कृषकों की भूमि है। यहां श्रम, समय और साधन के आधार पर ''बासी'' प्रमुख भोजन है। रात के शेष भात (पका हुआ चांवल) को पानी में भिगाकर सुबह नमक–चटनी के साथ उसे खाया जाता है। छत्तीसगढ़ियों का यह निराला भोजन है। इसके अतिरिक्त सोहारी, बरा, पपची, ठेठरी, खुरमी, खीर–तस्मई, चीला आदि पकवान भी उत्सव पर्व में भिन्न अवसरों बड़े हर्ष और उल्लास के साथ बनाया और खाया जाता है। पंडवानी में महाभारत की तरह भोज्य पदार्थो का वर्णन नहीं मिलता है फिर भी लोक संस्कृति को उजागर करने वाले भोज्य–सामग्री का वर्णन गायक अवश्य करते है। यथा **–बासी –**

''डोकरा ह– चुपचाप तरीका के साथ मोला बासी दे दे। तहां अपन खोलके देखत रहिबे। भईया एक बटकी बासी डोकरा बर निकालिस। डोकरा प्रेम के साथ में बासी खाय लागिस।''

चांवल कोदो–

''मां हम जोरदार भिक्षा लाय हन मां। भीतरी–भीतरी खुसरे कुन्ती कहिदीस –अरे। कोदई लानव के चांऊर लानव भिक्षा ल बेटा पांचों भाई बांट लव।'' [12]

इस तरह पंडवानी कलाकार अपनी प्रस्तुती में इन भोज्य पदार्थो का नाम प्रसंगवश उद्धृत करते है जिससे पंडवानी लोक संस्कशति के तत्वों की पुष्टि होती है।

अंचल विशेष में खेलकूद का अपना महत्व होता है। महाभारत में कौरव एवं पांडव दोनों राजघराने से संबंधित हैं। अत: वहां धनुषबाण, तलवार चालन, गदा चालन, कुश्ती आदि युध्द कौशल हेतु प्रमुखत: से वर्णित हैं परंतु पंडवानी छत्तीसगढ अंचल की विशेष धरोहर है– जिसके खेल डंड़ा पंचरंगा, भौंरा, बाटी, गिल्ली डंडा, फुगडी, घरघुंदिया आदि प्रसिध्द और प्रमुख हैं जो आंचलिक गुणवत्ता और महिमा मंडित करते है। यथा–

डंडा पंचरंगा खेलिग लेबो भईया मोर भईया दुर्योधन भीमसेन दाव ग देई ग देहि भाई।

केंवटा के बेटा करन के बलदेख भाई मछरी कोचरी खा–खा मोटावत हवेजी गिल्ली डंडा, खुडवा भौरा बांटी भंसगी सबो के सबो गांव भर ल हरावत हेवे जी। [13]

ये खेल ग्राम संस्कृति सभ्यता के द्योतक है जो पंडवानी के माध्यम से प्रस्तुत होते हैं।

संस्कार –

व्यक्ति के तन–मन की शुध्दि एवं व्यक्तित्व विकास के लिए जिन अनुष्ठानों और कर्मकांडों के द्वारा धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर विधान किया जाता है उन विधानों को संस्कार कहते हैं। भारतीय दर्शन में मनुष्य जीवन के लिए १६ संस्कारों का विधान सुनिश्चित किया हैं। महाभारत में शास्त्रानुसार इन समस्त संस्कारों का उल्लेख मिलता है। छत्तीसगढ़ की लोक प्रसिध्द नाट्यकथा पंडवानी में जन्म, विद्यारंभ, विवाह और मृत्यु के संस्कार प्रमुख रूप से वर्णित हैं। कथा गायक अपने गायन में इन संस्कारों को अपने आंचलिक वैशिष्टय और संस्कृति के अनुसार समावेश करते है।

पंडवानी में अनेक प्रसंग जन्म संस्कार के हैं। जैसे मंछदरी (मत्स्योदरी) की जन्म कथा, कुंवारी कुंती के

द्वारा कर्ण के जन्म की कथा आदि। छत्तीसगढ़ क्षेत्र में लोक प्रचलन है कि बालक के जन्म के छठवें दिन संस्कार होता है जिसे ''छट्ठी कहा जाता है। यह संस्कार बडे उत्साह पूर्वक सम्पन्न होता है। इस दिन मंगलगान एवं नाई के द्वारा बाल और दाढ़ी बनवाने का संस्कार आज भी छत्तीसगढ़ के गांवों में ही नहीं शहरों में भी प्रचलित है। पंडवानी गायक अपने परिवेश में संयुक्त करता है। यथा **''अधिरध घर बेटा अंवतरिस। छट्ठी म बाजा बाजे, उछा मंगल मनावे। नाउ संवार बनावे।''** [14]

अत्याधुनिक समय में भी यह संस्कार प्रत्येक देश और क्षेत्र में अलग–अलग रूपों में पाया जाता है। यह संस्कार सामाजिक और धार्मिक नियम एवं अनुष्ठानों में पूर्ण होता है। सभ्य, स्वस्थ एवं सुसंस्कृत परिवार एवं समाज हेतु यह संस्कार अति आवश्यक है। छत्तीसगढ़ अंचल में विवाह संस्कार के कई रूप है– जैसे ब्राम्हण विवाह (शास्त्र विधि) चढ़ बिहाव (लौकिक विधि) चूरी पहनाव विवाह (विधवा या परित्यक्ता को चुड़ी पहनाकर) आदि। शास्त्रोक्त एवं लौकिक रीति का मिला जुला वैवाहिक संस्कार छत्तीसगढ़ अंचल की परम्परा को व्यक्त करता है। वैवाहिक नियमों में चुलमाटी, तेलमाटी, देवतला, चीकट मायन, बारात परघौनी, नहडोरी, पानीग्रहण, बेटी बिदा आदि प्रमुख हैं– जिनका पालन किया जाता है। पंडवानी कलाकार कथा की तारतम्यता के आधार पर विवाह संस्कार का संस्पर्श करते हैं– ''राजा द्रुपद खुशी के मारे चांदी के रथ ल तैयार करिस। रथ को तैयार करके पांचों भाई पांडव, कश्ष्ण भगवान समेत सबो झन बइठार के द्रपदनगर म लइस। सबके भव्य स्वागत होईस। भईया मड़वा गड़े हे। हरियर मडवा में सुंदर आमा पत्ता, डूमर के पत्ता, सुंदर मंगरोहन हवय।

अइसे भइया प्रेम के साथ द्रौपदी अऊ पांचों भाई पंडवा के बिहाव होइस। धर्म टीका के रूप में सोना चांदी, हाथी–घोड़ा सब टिकिस। टीके के बाद सुंदर बरतिया विदा करथे राजा द्रुपद अऊ रानी सुदेसना के मन व्याकुल हो जथे। बेटी बिदा ये येहा। कहिथे बेटी मै आज तक तोला कोरा म खेलायेंव – तै पहुना होगे आज ले हमर बर बेटी पहुनाहोगे। '' [15]

समस्त संस्कारों में यह अंतिम संस्कार है। छत्तीसगढ़ अंचल में मृत्योपरांत दाह संस्कार के बाद तीन दिनों तीजनहावन, सात दिनों में सतनहावन, दस दिनों में दसनहावन और तेरहवें दिन में तेरही –मृत व्यक्ति की आत्मा की शांति के लिए किया विधान आदि अब भी प्रचलित है। पंडवानी में एक प्रसंग इस संदर्भ में इस प्रकार है कि युधिष्ठिर ने युध्द में प्राप्त वीरगति योध्दाओं का दाह संस्कार कर उनकी अस्थियों को गंगा में प्रवाहित किया। इस प्रसंग के उल्लेख में सार्वदेशिकता के साथ–साथ आंचलिकता, भी सन्निहित है।

मानवीय संबंधों की अवधारणा –

मानव का मानव के प्रति सहज प्रेम सद्भावना ही लोक संस्कृति का साध्य रहा है। लोक संस्कृति परस्पर प्रेम और उसका संवर्धन, जनकल्याण आदि की भावना से परिपूरित होती है। लोकमंगल की कामना इसका प्रमुख आधार है। ''आत्मवत्, सर्वभूतेषु किसी मनीषी के मानस में अकस्मात् नहीं आया। लोक जीवन के अनुभव एवं निष्कर्ष के फलस्वरूप आत्मेषु–सर्वभूतेषु का मूल्य लोक संस्कृति में स्थापित हुआ।

महाभारत की मूल कथा तो धर्म की स्थापना हेतु प्रणित है जिसमें कौरवों पांडवों तथा अन्य राजाओं के यश, शौर्य और धर्म आदि का प्रमुख रूप से चित्रण है। पंडवानी महाभारत का अनुसरण तो करती है परंतु पूर्णत: लोकानुकृति है। अत: इसमें मानवीय संबंधों की अवधारणा के तहत राजा–प्रजा, पिता–पुत्र, माता–पुत्र, पति–पत्नि, गुरू–शिष्य, आदि के स्वस्थ संबंध के आधार पर जनमानस की चित्तवृत्ति और लोक संस्कृति के दर्शन होते हैं।

राजा और प्रजा के मध्य मधुर संबंध होना आवश्यक है। सुखी राष्ट्र के लिए राजा का सम्मान प्रजा द्वारा और राजा की नीति प्रजा की सम्पूर्ण सुरक्षा एवं सुख प्रदान करने के लिए अतिआवश्यक है। पंडवानी गायक धर्मराज युधिष्ठिर को श्रेष्ठ, त्यागी, दयालु, धर्मपालक, दानी राजा मानकर उदाहरण देते हैं– ''राजा धर्मराज सोने के खजाना, राशन–पानी सबके खजाना राजा ल सौप दीस रागी।'' [16] पंडवानी के गायक अपने कथा गायन में **सबल सिंह चौहान** द्वारा रचित महाभारत

संपूर्ण को आधार बना कर संदर्भ रखते हैं। ऐसा ही कुछ संदर्भ यहां भी है जहॉ राजा युधिष्ठिर श्रेष्ठ राजा के रूप में अवतरित हैं–

इन्द्र समान राज्य नश्प करई। चलै सुमार्ग सतय नहीं टरई।
नीति निपुणता जगमहिं छाई। प्रजा लोग सुख ललहि अघाई।
सम्पत्ति गृह कुबेर ते भारी, राज बंध सब आज्ञाकारी।'' 17

सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में पिता–पुत्र का संबंध श्रेष्ठ और अत्यंत संवेदनशील माना गया है। पंडवानी में भी शान्तनु–देवव्रत(भीष्म), धृतराष्ट्र–दुर्योधन, अर्जुन–अभिमन्यु, आदि के संबंध भी लोक संस्कृति के मधुर एवं स्नेहसिक्त संबंधों को दर्शाते हैं।

यथा देवव्रत(भीष्म) अपने पिता शांतनु के लिए आजीवन विवाह न करने का प्रण करते हैं। यथा– ''दासा राम केंवट के घर भीष्म पितामह चले। बोले महाराज मै सत्यवती के लिए आएवं। राजा शांतनु के लिए मंगनी जंचनी करे बर चले आए हवं। दासाराम कहे अरे शांतनु के बड़े वाले बेटा अस। मोर बेटी के कोख ले लइका होय तेने राजा बने। अइसे होय त बिहाव करहूं। हंस कर भीष्म ह काहन लागे भइैया।'' 18

सबल सिंह चौहान कृत महाभारत की निम्न पंक्तियां से समरूपता भी है–

भीषम तब कीन्हों सोई, वचन बंध परमाण।
हमको राज्य न चाहिए पिता होई कल्याण। 19

माता–पुत्र के संबंध और समस्त मानवीय संबंधों में सबसे पवित्र एवं सर्वोत्तम है। पंडवानी में मातृसेवा, मातृभक्ति एवं दोनो के मध्य अपेक्षा रहित प्रेम के अनेक उदाहरण मिलते हैं। महर्षि व्यास का अपनी माता सत्यवती के प्रति मातृप्रेम, आज्ञा एवं आदर्श का परिचय देते हुए वंशवृध्दि के लिए उसके आदेश का पालन करते हैं। पाण्डव पुत्र को अपनी माता कुंती के आदेश के कारण द्रौपदी को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करना, गांधारी का अपने पुत्र–प्रेम के कारण दुर्योधन के शरीर को सतीव्रत से वज्र बनाना आदि मानवीय प्रसंग मानवीय संबंधों की गहनता को प्रकट करते हैं।

पति–पत्नि का संबंध भी परस्पर सद्भावना, साहचर्य, समर्पण आदि श्रेष्ठ भावनाओं पर आधारित होता है। पंडवानी में धृतराष्ट्र–गांधारी, पांडव पुत्र और द्रौपदी, इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं। ऐसे ही गुरू–शिष्य संबंध में द्रोणाचार्य एवं पांडव–कौरव जग प्रसिध्द हैं। स्वामी–सेवक का संबंध पंडवानी प्रसंग में उद्धृत होता है कि पांडव के द्वारा वनवास में एक वर्ष अज्ञात में पांडव पुत्रों द्वारा राजा विराट के राज्य में वेश बदल इस संबंध का सफलता पूर्वक निर्वाह किया गया। राजा विराट एवं उनकी प्रजा की रक्षा उन्होंने सेवक भाव से किया वहीं राजा विराट ने भी अपने सेवकों के प्रति मित्रवत् व्यवहार किया। इस तरह पंडवानी में ये सभी प्रसंग आते है, जिन्हें गायक अपनी कथा गायन में आधार बनाकर प्रेम, त्याग, सहयोग, कर्तव्य, समर्पण, साहस, सद्भावना, उत्सर्ग आदि भावनाओं का उजागर कर अपने अंचल की संस्कृति को महिमा मंडित करते है।

आंचलिक व्यवसाय –

भारत गांवों का देश कहा जाता है। उसकी संस्कृति श्रम, श्रध्दा और विश्वास की संस्कृति है। डां. पालेश्वर शर्मा इस संदर्भ में लिखते है कि '' गांव की आत्मा उसकी संस्कशति एक ऐसी शकुन्तला है जो ऋषिकन्या है, फिर भी उपेक्षिता है। फिर भी उसका पथ जीवन है, मरण नहीं उसमें विश्वास और श्रध्दा है, मश्त्यु की पराजय और क्षुद्रता नहीं।'' 20

छत्तीसगढ़ की संस्कशति श्रम जीवि संस्कृति है। यहां के लोग चाहे किसान हो, मजदूर हो वे सम्प्रदाय मुक्त होकर मानवीयता की रक्षा और विकास के लिए सश्जनशील होते है। यहां का मुख्य व्यवसाय कृषि है। छत्तीसगढ़ का सम्पूर्ण लोकसाहित्य कृषि संस्कृति से ओत–प्रोत है। सामूहिक श्रम–साधना से अहीर, धोबी, कहार, कृषकों की अन्तर आत्मा, आप्लावित है। खेतिहारों की कटाई, बोवाई, निंदाई, रोपाई आदि लोक साहित्य में घुले–मिले हैं। इस ग्राम्य संस्कशति में विलक्षण अनुशासन है।

पंडवानी कलाकार कृषक एवं मजदूर वर्ग के होते हैं जो अपने मुख्य कार्य का सम्पादन कर अतिरिक्त कार्य के रूप लोकसंस्कृति की रक्षा में संलग्न पंडवानी गायन वादन और अभिनय करते हैं। अत: इनके गायन,

वादन एवं अभिनय में ऑचलिक व्यवसाय की संस्कृति पूर्णत: अभिव्यक्त होती है। ये ही वास्तव में लोक संस्कृति के सर्जक और उन्नायक होते है। पंडवानी गायन में कशषि संस्कृति के पुष्ट प्रमाण मिलते है। यथा — ''जिरजोधन अपन संग म सेनापति मन ल धर के युध्द के मैदान खोजे बर गईस। एक जघा भांठा म किसान अउ ओखर बेटा नांगर जोतत रहिस, ततके बेर किसान के बेटा ल भांठा डोमी (सर्प की एक जहरीली प्रजाति) चाब दिस। मुंह डहार ले गाजा फेंकन लगिस। देह करियागे परान छुटगे। किसान रोइस न गइस, बेटा के लास ल तिरिया के फेर नांगर जोतन लगिस।'' [21]

कृषि कार्य के लिए गौ—बैल पालन अति आवश्यक होता है। पंडवानी में गो—पालन का भी उल्लेख मिलता है। राजा विराट के पास हजारों गायें थी। अज्ञातवास के समय राजा विराट के यहां सहदेव गोपालक के रूप में कार्य करते हैं। प्रसंगानुसार उदाहरण ''राजा दुर्योधन गौ हरन करे बर विराट नगर पहुंचिस । राजा विराट के नगर में जतेक बलवान रहे गैया चराय बर गे रिहिन। ऊंखर बीच में राजा युधिष्ठिर के छोटे भाई सहदेव राहय। कौरव दल जाके सब गौ मन ल घेरना सुरू कर दीस।'' [22]यहां का कशषक जीवन छल—कपट से दूर निर्लिप्त अहंकारहीन, सादगी और सौहार्द्र से भरपूर है। पंडवानी के पांडवों का जीवन भी कृषक जीवन से साम्यता, रखता है। वे अभावों से संयुक्त जीवन व्यतीत करते है तथापि उनके जीवन की सादगी, सत्यता, मृदुता सौहार्द्र लोकजीवन को आकर्षित करते है।''

निष्कर्ष —

निष्कर्षत: पंडवानी में लोक संस्कृति प्रवाहित है। वसुधैव कुटुम्बकम्, के माध्यम से एक सूत्र में बांधने के साम्र्थ्य की शाश्वत प्रतीति पंडवानी में है। पंडवानी में प्रादेशिक लोक जीवन का अंकन और भारतीय संस्कृति का स्पंदन है। यह प्रेम, सौहार्द्र, नैतिकता, शौर्य, पराक्रम और मनोरंजन का कभी न समाप्त होने वाला स्त्रोत है। यह वह बहुमूल्य संस्कृति की विरासत है जो मौखिक परम्परा द्वारा पीढी—दर पीढ़ी चली आ रही है। छत्तीसगढ़ की पंडवानी में ज्ञान आलोक, मानवता का सौरभ, संवेदनाओं का शीतल बयार और प्रेम की अविरल झरना प्रवाहित है जिसमें आत्मिक, आनंद की प्राप्ति होती है। यही उसकी लोक संस्कृति है। डॉ. उर्मिला शुक्ल का कथन इस संदर्भ में दृष्टव्य है— ''पंडवानी में छत्तीसगढ़ के लोकजीवन की अभिव्यक्ति है। इसमें लोक संस्कृति अंत: सलिला की भांति निरन्तर प्रवाहित होती रही है।'' [23]

संदर्भ ग्रंथ —

१ .संस्कृति गंगा—डॉ. मन्नू लाल यदु—२००२ पृष्ठ—२२
२. छत्तीसगढ़ के प्रकाशित आंचलिक उपन्यासों का अनुशीलन—डॉ. कश्ष्णा चटर्जी—भावना प्रकाशन, नई दिल्ली—२००६—पश्ष्ठ—५४
३ साहित्य संदेश पत्रिका—डॉ. विश्वंभर नाथ उपाध्याय—१९५८—पृष्ठ—२१
४. छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन—डॉ. अनीता शुक्ला—जगभारती प्रकाशन, इलाहाबाद—२०१४ पृष्ठ—४
५. लोक संस्कृति आयाम एवं परिप्रेक्ष्य—डॉ. महावीर अग्रवाल—शंकर प्रकाशन, दुर्ग—१९८७ पृष्ठ—१०
६. हिन्दी के ऑचलिक उपन्यासों की शिल्प विधि—नेशनल पब्लिशिंग हाउस—दिल्ली—१९८६ —पृष्ठ—५९
७. हिन्दी नाटक और रंगमंच में लोकतत्व—डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा— सत्य पब्लिशिंग हाऊस — २०१३— पृष्ठ—११
८. आलोचना त्रैमासिका पत्रिका— सहस्त्राब्दी अंक—३६ जनवरी मार्च—२०१० लेख लोक की अवधारणा और हबीब तनवीर— ऋषिकेश सुलभ—पृष्ठ ६३
९ ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन— डॉ. सत्येन्द्र —साहित्य रत्न भंडार, आगरा—१९४९—पृ ४५
१०. पंडवानी परम्परा और प्रयोग — डॉ. पी.सी. लाल यादव,— वैभव प्रकाशन, रायपुर — २०११ — पृष्ठ — १६०
११. पंडवानी परम्परा और प्रयोग — डॉ. पी.सी. लाल यादव, —वैभव प्रकाशन, रायपुर — २०११ — पृष्ठ — १६२